साम्ब ने बनवाया था सूर्य मंदिर : श्रीकृष्ण के पोते राजा साम्ब ने कुष्ठ रोग से निजात के लिए बड़गांव के तालाब में स्नान किया था। उसके बाद उन्होंने यहां सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया। तब से यहां छठ करने की विशेष महत्ता है। उसी वक्त से यहां चैती व कार्तिक छठ के मौके पर मेला लगता है।

अमेरिका में भी मनाते हैं छठ: बिहारी मूल के वाशिंगटन विश्वविद्यालय अमेरिका के छात्र प्रणव मिश्रा बड़े उत्साह के साथ बताते हैं कि हमारा सारा परिवार अभी भी छठ की परंपरा को जीवित रखे हुए है। मेरे पिता जी भी इस पर्व को मनाने में किसी से पीछे नहीं रहते।

विदेश में छठ पूजा के जरिए अप्रवासी बिहारियों की बनी पहचान, सारे विधि-विधान के साथ करते हैं छठ

अमेरिका पहुंचा आस्था का महापर्व छठ, परदेस में भी नहीं भूले अपनी संस्कृति

एमजे वारसी

अमेरिका में भारतीय त्योहार बहुत लोकप्रिय हैं। होली और दीवाली के साथ–साथ छठ भी अप्रवासी बिहारी हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। अमेरिका में छठ की लोकप्रियता में पिछले कुछ वर्षों में काफी वृद्धि हुई है।

छठ चार दिन लंबा त्योहार है और अब दुनियाभर में प्रवासी बिहारियों के मुख्य समारोहों में से एक बन गया है.

बेतिया के प्रदीप राय जो टेक्सास के ह्यूस्टन शहर में रहते हैं, उन्होंने बताया कि हमलोग अपनी संस्कृति के बारे में बहुत ही भावुक होते हैं और हम कहीं भी चले जाएं अपनी जड़ों और रीति–रिवाजों को कभी नहीं भूलते। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम हैदराबाद में हों या सात समंदर पार ह्यूस्टन में। हम हमेशा अपने त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यकर्मों का जश्न मनाने पर बहुत ही गर्व महसूस करते हैं। छठ चूंकि बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है इसलिए हम जहां भी रहते हैं बहुत उत्साह के साथ त्योहार मनाते हैं। जब मेरे माता-पिता ह्यूस्टन आए थे, हमलोगों ने पूरी श्रद्धा के साथ छठ पर्व मनाया। मेरी मां ने चार दिनों तक उपवास किया। छठ मनाने के लिए तो आवश्यक वस्तुएं जैसे डाला और सूप तो हम भारत से ही ले आए थे। दूसरी चीजें जैसे फूल, फल, अनाज, सूखा नारियल, गन्ना, सफेद मूली, मिठाई, केले के पत्ते, अगरबत्ती, पान के पत्ते, सुपारी, दीये आदि यहीं ह्यूस्टन में ही भारतीय और मैक्सिकन दुकानों में मिल गए थे। पकवान जैसे ठेकुआ, खजूर, पेडुकिया ये सब घर पर ही बनाया गया था। मेरी मां ने दर्जनों छठ

विदेश में छठ

- विदेशों में बसे अप्रवासी बिहारी पूरी श्रद्धा के साथ मनाते हैं छठ
- अपने देश के पर्व–त्योहारों को मनाने में करते हैं गर्व की अनुभूति

के गीत गाए थे। अमेरिका में गंगा नदी के अभाव में हमलोगों ने स्विमिंग पूल का उपयोग दोनों अर्घ्य के लिए किया।

बिहारवासियों के लिए छठ पूजा का बड़ा महत्व है। हम इस त्योहार को मनाते हुए बड़े हुए हैं इसलिए हम दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं यह असंभव है कि आस्था के इस महापर्व के मनाने में भावनाओं में कोई कमी आए। अब तो ये त्योहार हमारी पहचान का एक हिस्सा बन गयी है। छठ पूजा के गीतों को सुनकर जो भावनाएं हमारे दिल में उत्पन्न होती हैं उसका विवरण मेरे लिए बहुत मुश्किल है। मुझे आज भी याद है कि छठ गीतों को सुनते हुए मेरी पत्नी की आंखों में आंसू भर आये थे। ये बातें रवि शेखर, अनुसंधान विशेषज्ञ ने बताया जो बिहार से हैं और कई सालों से अमेरिका के एक्सान मोबील अपस्ट्रीम रिसर्च कम्पनी में काम कर रह रहे हैं।

दूसरी पीढ़ी के बिहारी मूल के वाशिंगटन विश्वविद्यालय अमेरिका के छात्र प्रणव मिश्रा बड़े उत्साह के साथ बताते हैं कि हमारा सारा परिवार अभी भी छठ की परंपरा को जीवित रखे हुए हैं। मेरे पिता जी भी इस पर्व को मनाने में किसी से पीछे नहीं रहते। हमारे माताजी और पिताजी दोनों नदी के अभाव में बाहर हॉट टब में स्नान करते हैं। दूसरे दिन मेरी मां व्रत रखती हैं। तीसरे दिन भी मेरी मां पूरे दिन व्रत रखती हैं। हालांकि परंपरा के अनुसार भोजन और पानी दोनों का उपवास रखा जाता है परन्तु यह हमेशा संभव नहीं हो पाता है क्योंकि दोनों आफिस में काम करते हैं। फिर भी वे अक्सर व्रत रखने का प्रयास करते हैं ताकि पर्व को पूरी आस्था के साथ मनाया जा सके। **(लेखक भाषावैज्ञानिक हैं और वाशिंगटन विवि में पढ़ाते हैं)**

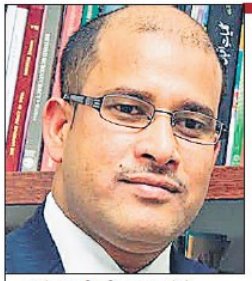

एमजे वारसी की फाइल फोटो

छठ करने दुबई, अमेरिका व जर्मनी से भी पहुंचे लोग

आरा। आस्था, भक्ति और विश्वास का संगम हो तो सात समुंदर पार और वतन के बीच के फासले भी कम हो जाते हैं। यह रिश्ता है प्रेम का और लोगों से दिल मिलाने का। हर छठ पर भोजपुर जिले के डुमरिया के रहने वाले मनोज सिंह परिवार समेत स्वदेश पहुंच जाते हैं और पहले अपनी धरती मइया को चूमते हैं और फिर सूर्य देव की उपासना में तल्लीन हो जाते हैं। दुर्गा पूजा खत्म होते ही दुबई से मनोज सिंह और उनका पूरा परिवार भारत लौट आया। दुबई में पैकेजिंग व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद भारत की संस्कृति, संस्कार, सभ्यता और रहन–सहन को अपने जीवन में आत्मसात कर लेने वाले मनोज सिंह अपनी पत्नी सिंटू सिंह,भाई अमित सिंह उनकी पत्नी रंजू सिंह और बच्चे पुल्कित, पृथ्वी और कीर्ति के साथ आए हैं। पूजा को लेकर उत्साह, उमंग और गजब का जज्बा सभी के अंदर हिलोरे मार रहा है। गांव के लोगों के साथ मिलकर साफ–सफाई से लेकर घाटों की सजावट में सभी जुटे हुए हैं। छठ पर्व की अटूट आस्था सिर्फ डुमरिया के मनोज सिंह के साथ ही नहीं जुड़ी है। चांदी स्थित अपने ननिहाल अमेरिका से निशांत व शिल्पी पहुंचे हैं, तो नवादा के रहने वाले अभिनव जर्मनी से अपने घर छठ में शामिल होने आये हैं। वे कहते हैं सूर्योपासना से बढ़कर कोई पवित्र पर्व नहीं है।